Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

2TH

2 थिस्सलुनीकियों 1:1–12, 2 थिस्सलुनीकियों 2:1–12, 2 थिस्सलुनीकियों 2:13–3:5, 2 थिस्सलुनीकियों 3:6–18

2 थिस्सलुनीकियों 1:1–12

थिस्सलुनीके के विश्वासियों के साथ प्रभु यीशु मसीह की सेवा करने के कारण दुर्व्यवहार का सामना कर रहे थे। पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने हार नहीं मानी।

उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि वे कष्ट सहने के बावजूद अपने विश्वास और प्रेम में बढ़ते रहे। पौलुस ने उन्हें अन्य कलीसियाओं को प्रोत्साहित करने के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। यह स्पष्ट था कि थिस्सलुनीकियों के लोगों ने विश्वासयोग्य साक्षी बनकर यीशु को महिमा दी।

फिर भी, उनके जीवन में उन लोगों के कारण बहुत सारी समस्याएँ थीं जो उनके विश्वास का विरोध करते थे। पौलुस ने उन्हें सांत्वना दी और उन्हें आशा दी। जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे, तो एक न्याय का दिन होगा। परमेश्वर लोगों के बुरे कर्मों को रोक देंगे।

जिन लोगों ने थिस्सलुनीकियों के साथ बुरा व्यवहार किया, उन्होंने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि यीशु प्रभु हैं। इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर के राज्य का हिस्सा बनने से इंकार कर दिया। पौलुस ने थिस्सलुनीकी विश्वासियों को उनके लिए अपनी प्रार्थना के बारे में बताया।

उन्होंने प्रार्थना की कि परमेश्वर उनमें कार्य करते रहें और उनके अच्छे इच्छाओं को आशीर्वाद दें। थिस्सलुनीकियों ने यीशु में अपने विश्वास के आधार पर अच्छा करने का हर संभव प्रयास किया। परमेश्वर की शक्ति और अनुग्रह ने उनके प्रयासों के कारण अच्छे परिणाम उत्पन्न किए।

2 थिस्सलुनीकियों 2:1–12

पौलुस नहीं चाहते थे कि थिस्सलुनीकियों को यह चिंता हो कि प्रभु का दिन पहले ही आ चुका है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यीशु अभी तक पृथ्वी पर नहीं लौटे हैं।

उन्होंने कुछ घटनाओं का वर्णन किया जो यीशु के वापस आने से पहले होंगी। पाप की शक्ति को पूरी तरह से कार्य करने की अनुमति दी जाएगी। कुछ भी बुराई को रोकने या परमेश्वर की संसार की रक्षा करने में सक्षम नहीं होगा।

पापी मनुष्य परमेश्वर का विरोध करेगा और बहुत से लोगों को धोखा देगा। बहुत से लोग पापी मनुष्य और शैतान द्वारा धोखा खाने का चुनाव करेंगे। शैतान का दूसरा नाम है दुष्ट आत्मा। परमेश्वर इन लोगों को धोखा खाने की अनुमति देंगे क्योंकि वे यीशु के बारे में सत्य से घृणा करते हैं।

फिर यीशु, जो सच्चे परमेश्वर हैं, पृथ्वी पर लौटेंगे। वे पाप के मनुष्य और हर उस चीज़ को नष्ट कर देंगे जो परमेश्वर का विरोध करती है।

2 थिस्सलुनीकियों 2:13–3:5

थिस्सलुनीकियों के लोग उन लोगों की तरह नहीं थे जो धोखा खाने का चुनाव करते हैं। उन्होंने यीशु के बारे में सत्य पर विश्वास किया। उन्होंने उस प्रेम, आशा और अनुग्रह को स्वीकार किया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया।

परमेश्वर ने उन्हें उस व्यक्ति से बचाया जिसे पौलुस ने दुष्ट कहा था। यह शैतान और दुष्ट आत्मिक प्राणियों के बारे में बात करने का एक और तरीका है।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को याद दिलाया कि परमेश्वर शक्तिशाली हैं। परमेश्वर ने उन्हें शक्ति दी और अपने प्रेम से भर दिया। इसलिए पौलुस ने उनसे आग्रह किया कि वे अपने विश्वास में दृढ़ रहें। उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे पवित्र जीवन जीते रहें।

उन्होंने थिस्सलुनीकियों से प्रार्थना करने की विनती की कि वे उनके लिए और उनके साथ काम करने वालों के लिए प्रार्थना करें। यद्यपि कई लोग पौलुस का विरोध करते थे, फिर भी वे यीशु के बारे में संदेश फैलाना जारी रखना चाहते थे।

2 थिस्सलुनीकियों 3:6–18

पौलुस ने विभिन्न प्रकार के कार्य किए। एक प्रेरित के रूप में, उन्होंने दूसरों के साथ यीशु के बारे में सुसमाचार साझा किया। उन्होंने इसके लिए पैसे नहीं लिए।

2 थिस्सलुनीकियों 3:6–18

उन्होंने अपने हाथों से भी काम किया ताकि अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। जो लोग पौलुस के साथ यात्रा करते थे, वे भी दोनों प्रकार के काम करते थे। पौलुस के साथ यात्रा करने वाले लोग भी दोनों तरह के काम करते थे। यही वह उदाहरण था जो उन्होंने थिस्सलुनीकियों को सिखाया था। फिर भी कलीसिया में कुछ लोगों ने कोई भी काम करना बंद कर दिया था। जो लोग यीशु के अनुयायी हैं, उन्हें अपनी ज़रूरत की चीज़ें कमाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। और उन्हें कभी भी अच्छा काम करना बंद नहीं करना चाहिए।

पौलुस चाहते थे कि थिस्सलुनीकियों उसी प्रकार जीवन व्यतीत करें जैसा उन्होंने उन्हें सिखाया था। पौलुस के पत्र हमेशा उनके अपने हस्तलेख में समाप्त होते थे। वह ऐसा इसलिए करते थे ताकि विश्वासियों को उनकी शिक्षाओं पर विश्वास हो सके।